विद्यासागर विश्वविद्यालय

हिंदी विभाग

पत्र संख्या - HIN122 , Semester – II

Provided by – Dr.Pramode Kumar Prasad

Scanned with CamScanner

अध्याय-20

शैली - विज्ञान

शैली : व्युत्पत्ति तथा स्वरूप- काव्य शास्त्र के विद्वान्, रस - मर्मज्ञ स्व. **डॉ. नगेन्द्र** के अनुसार [1], 'शील' शब्द में 'अण्' प्रत्यय के योग से शैली शब्द बना है। अत: शैली के मूल में 'शील' शब्द है। शील का अर्थ है - स्वभाव । अंग्रेजी 'स्टाइल' (Style),रीति, पद्धति, ढंग या विधि- इन शब्दों को विद्वानों ने अपने - अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है। अत: यह शब्द स्वयं में व्यापक अर्थों एवं अनेक संदर्भो में प्रयुक्त होने के कारण अनेकार्थी बन गया है। बोलचाल, रहन-सहन, खान-पान आदि से संबंधित शैली हो सकती है, किन्तु विवेचन संदर्भ में शैली का संबंध भाषिक अभिव्यक्ति की विधि से होने के कारण इसका अर्थ सीमित हो गया है। वस्तुत: भारतीय साहित्य में 'शैली' शब्द का प्रयोग अंग्रेजी शब्द Style के पर्याय के रूप में होता है। यह Style शब्द लैटिन के 'स्टिलत' से उत्पन्न माना जाता है,जिसका अर्थ पत्थर, हड्डी या धातु से बनी कलम अथवा लेखनी के रूप में होता था। 'स्पेनी' और 'पुर्तगाली' में यह 'स्टाइलो' लिखा जाता है और इटेलियन में 'स्टीलों'। यह 'स्टीलो' लैटिन के 'स्टिलस' शब्द से पैदा हुआ है।

इधर, ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी [2] में अंग्रेजी Styleके अनेक प्रचलित - अप्रचलित अर्थ दिए गए हैं, यथा - लेखन, लेखन की विधि तथा व्यापक अर्थ में अभिव्यक्ति की विधि । **आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी** कहते हैं कि[3] -'शैली' शब्द Style से गृहीत हुआ है और Style के अर्थ में प्रयुक्त भी हो रहा है। मेरा अनुमान है कि 17 वीं शताब्दी तक पश्चिम में इस शब्द का प्रयोग काव्य की भूमिका के लिए हुआ करता था और इसकी व्याप्ति सीमित थी। प्राय: समीक्षकगण महाकाव्य की शैली या शब्द योजना, दुखान्त नाटक की शैली या शब्द - योजना, सुखान्त नाटक की शैली या शब्द - योजना पर ही विशेष रूप से विचार करते थे। जब से विदेशों में काव्य के अतिरिक्त गद्य की अनेक विधाओं का निर्माण होने लगा और उन विधाओं के अनुरूप अनेक प्रकार की शब्द और भाव - योजना प्रचलित होने लगी, तब से 'स्टाइल' शब्द का प्रयोग कवियों एवं लेखकों के यहाँ व्यक्तिगत रचना - विशेषता पर होने लगा । यद्यपि तब भी शैली शब्द मुख्यत: भाषा - प्रयोग तक सीमित था।

शैली तथा रीति- 'रीति' शब्द को कुछ लोग 'शैली' का पर्यायवाची मानतें हैं। इन लोगों के अनुसार रीति और शैली समानार्थी हैं। वस्तुत: 'रीति' शब्द संस्कृत साहित्य का है, जब कि 'शैली' पाश्चात्य Styleशब्द का हिन्दी - रूपान्तर है। यद्यपि दोनों शब्द पृथक - पृथक परंपराओं के हैं, परन्तु रीति और शैली अर्थ की दृष्टि से बहुत कुछ समीप माने जाते हैं और कभी - कभी इनका प्रयोग पर्यायवाची रूप में भी होता है। रीति का मूल अर्थ 'संघटना' है। रीति प्राय: विषयगत होती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि रीति और शैली - शब्दों में बहुत दूर तक समानार्थकता है। **डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना** लिखते हैं कि[4] - ''यह 'शैली' शब्द अंग्रेजी के 'स्टाइल' शब्द का अनुवाद है। कुछ विद्वानों ने अंग्रेजी के 'स्टाइल' शब्द के लिए 'रीति' कहना उपयुक्त माना है। परन्तु 'रीति' शब्द 'रचना - विधि' या 'गमन - विधि' का वाचक होने के कारण 'स्टाइल' के सम्पूर्ण अर्थ का द्योतक नहीं है। 'स्टाइल' शब्द केवल 'रचना - विधि' या 'गमन - विधि' का ही द्योतक नही है, अपितु इसमें वक्ता की वक्तृत्व - पद्धति, लेखक की अभिव्यंजना - पद्धति, उसकी वैयक्तिक विशिष्टता, विषय - विवेचन की प्रविधि, व्यक्ति के आचार - व्यवहार का ढंग, बोलने या बातचीत करने का लहजा, किसी कवि या लेखक के मस्तिष्क में उठने वाले भावों या विचारों के प्रतिरूप आदि का भी समावेश रहता है। अत: 'स्टाइल' को 'रीति' कहना कदापि संभव नहीं हैं। इसी कारण **पं. रामदहिन मिश्र** ने स्पष्ट लिखा है कि 'शैली के लिए रीति का प्रयोग होता है, पर वह यथार्थ नहीं। शैली के लिए स्टाइल (Style) शब्द का प्रयोग उपयुक्त माना जाता है। इसको भाषा - शैली भी कहते हैं। भाषा - शैली भावानुरूप होनी चाहिए। भावनाएँ अपने आकार को प्रस्तुत करने के लिए काव्यांगों - गुण, रीति, अंलकार, वक्रोक्ति आदि - को अपनाती हैं। इसमें रीति व भाषा - शैली लेखक के भावात्मक शरीर को पहनाई हुई पोशाक नहीं है, बल्कि उसे उसकी चमड़ी समझनी चाहिए। इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिए कि कलाकार का व्यक्तित्व भाषा - शैली से फूट पड़ता है।[5] पं. रामदहिन मिश्र के इस कथन से दो तथ्य

1. भारतीय काव्य शास्त्र की भूमिका शैली विज्ञान - डॉ. नगेन्द्र- पृ.18 सन् 1976
2- Oxford Dictionary - Page - 7, London
3- रीति और शैली - आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी, पृ. - 163, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, मूल्य- 50 रूपये।
4. भाषा- विज्ञान का सिद्धान्त और हिन्दी भाषा, - पृ. 251
5. काव्यदर्पण- काव्य शास्त्र की भूमिका, 85-86

Scanned with CamScanner

हमारे सामने उपस्थित होते हैं - एक तो यह कि 'रीति' शब्द 'स्टाइल' के उपयुक्त नहीं है। दूसरा यह कि 'रीति' शब्द इतना व्यापक नहीं है, जितना कि 'शैली' शब्द , क्योंकि रीति तो एक 'विशिष्ट पद - रचना' को ही कहते हैं और वक्रोक्ति , गुण, अंलकार आदि उससे सर्वथा भिन्न हैं, जबकि 'शैली' के अन्तर्गत न केवल रीति आती है, अपितु गुण, अलंकार, वक्रोक्ति, वृत्ति, प्रवृत्ति, दोष, ध्वनि आदि अभिव्यंजना के सभी तत्व आ जाते हैं। इतना ही नहीं, 'शैली' शब्द इतना व्यापक है कि इसके अन्तर्गत आज प्रतीक, बिम्ब, छन्द, लय, स्वरमैत्री, पदमैत्री, नादात्मकता आदि अभिव्यंजना की नूतन - नूतन पद्धतियों का भी समावेश हो जाता है। **डॉ. नगेन्द्र** ने ठीक ही लिखा है - 'रीति' शब्द शास्त्ररूढ़ बनकर रह गया है और उस पुराने सिक्के को आज चालू करना कठिन है, जबकि 'स्टाइल' के सम्पूर्ण अर्थ का वहन करता हुआ 'शैली' शब्द हिन्दी आलोचना का टकसाली सिक्का है। शब्दों का अर्थ - विशेषकर धारणामूलक शब्दों का अर्थ सतत विकासमान रहता है। जिस प्रकार अंग्रेजी में 'स्टाइल' शब्द रचना - विधि के अनेक सीमान्तों का स्पर्श करता हुआ अपने आधार - अर्थ को अक्षुण्ण बनाए हुए है, इसी प्रकार शैली की अर्थ - व्याप्ति को भी स्वीकार कर लेना चाहिए ।''[1]

अत: **डॉ. सक्सेना** के विचार से उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि ''अंग्रेजी शब्द 'स्टाइल' के लिए 'रीति' शब्द उतना उपयुक्त एवं अर्थ - बोधक नहीं है, जितना कि 'शैली' शब्द है। इस 'शैली' शब्द में जितनी व्यापकता है, उतनी 'रीति' शब्द में नहीं है। 'रीति' शब्द काव्यशास्त्र की एक विशिष्ट पद्धति का द्योतक है, वह 'बिशिष्ट पद - रचना' के लिए रूढ़ हो गया है,उसकी अपनी सीमा है और वह 'स्टाइल' के आन्तरिक भाव को स्पर्श नहीं कर सकता। इसके ठीक विपरीत 'शैली' शब्द न तो पुरातन पद्धति का परिचायक है, न काव्यशास्त्र की किसी रूढ़ि का द्योतक है, न यह केवल 'पद - रचना' तक सीमित है और न यह किसी वस्तुनिष्ठ अर्थ के लिए प्रयुक्त होता है, अपितु यह शब्द - अभिव्यंजना की विविध पद्धतियों को स्पर्श करता है, यह रचना - विधि के अनेक सीमान्तों तक व्याप्त है, यह रचना - प्रविधि के सभी तत्वों को अपने अन्तर्गत समाहित किये हुए है और यह कृति के अतिरिक्त कृतिकार के व्यक्तित्व, व्यवहार - पद्धति, आचार - विचार, रीति - नीति, वैयक्तिक वैशिष्ट्य आदि का भी द्योतक है।''

हिन्दी - विदुषी **डॉ. नरेन्द्र सैनी** का विचार है कि [2]- शैली - विज्ञान का प्रादुर्भाव **चार्ल्स बेली** द्वारा "Stylistic"शब्द के सर्वप्रथम अपनी दो पुस्तकों -Precis de Stylistique. Geneva. 1905 तथा Traitde Stylistions Tranciase. Heidelberg. 1904 में व्यवहार से हुआ, जिसका क्षेत्र कभी भाषा अध्ययन तक सीमित था, किन्तु आज यह स्वतंत्र ज्ञानानुशासन के रूप में स्थापित हो चुका है। अत: इस ज्ञानानुशासन की सैद्धान्तिकी का आधार क्षेत्र तो भाषा विज्ञान है, पर विश्लेषण का क्षेत्र साहित्य से सम्बद्ध है। शैली विज्ञान का वास्तविक प्रादुर्भाव नौवें अन्तर्राष्ट्रीय भाषाविद् अधिवेशन में **रोमन - याकोब्सन** की घोषणा से हुआ । अब तक भाषा का जो अध्ययन भाषा - वैज्ञानिक मात्र था, उसे साहित्य के क्षेत्र में लाया गया। इसी से शैली के वैज्ञानिक अध्ययन का आरंभ हुआ। पश्चिम के **हेलिडे** कहते हैं कि किसी भाषा - विशेष के ध्वनि, व्याकरण, शब्द तत्वों की आवृत्ति के अनुरूप प्रस्तावित पाठ का अध्ययन करना ही शैली विज्ञान का प्रमुख अंग है।

नयी - समीक्षा में काव्य - भाषा का प्रतिमान स्वतंत्र समीक्षा - विधि के रूप में भाषा - विज्ञान से जुड़ गया है,जिसे **डॉ. रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव** ने 'शैली - विज्ञान 'की संज्ञा दी है और **डॉ. विद्या निवास मिश्र** 'रीति - विज्ञान कहते हैं। उनका मत है कि पाश्चात्य 'स्टाइल' शब्द को 'रीति' और 'लिंग्वो स्टाइलिस्टिक्स' को भारतीय संदर्भ में 'रीति

विज्ञान कहते हैं। उनका मत है कि पाश्चात्य 'स्टाइल' शब्द को 'रीति' और 'लिंग्वो स्टाइलिस्टिक्स' को भारतीय संदर्भ में 'रीति

विज्ञान' कहना अधिक उपयुक्त है ।[3] कुल मिलाकर हम शैली - विज्ञान का स्वरूप निर्धारण इस प्रकार कर सकते हैं, -

1- शैली विज्ञान साहित्य का अध्ययन है, 2- शैली विज्ञान साहित्यिक भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन है, 3- शैली विज्ञान साहित्य का विज्ञान है, 4- शैली विज्ञान भाषा विज्ञान की वह शाखा है, जिसका क्षेत्र साहित्य है तथा, 5- शैली विज्ञान समीक्षा का वह नवीन आयाम है, जो साहित्य का अध्ययन भाषा - विज्ञान के सिद्धान्तों और प्रविधि के आधार पर करता है।[4] यद्यपि कुछ विद्वान शैली विज्ञान के उक्त स्वरूप को पूर्णकाम नहीं भी मान सकते हैं।

शैली की परिभाषा- (क)- पाश्चात्य परिभाषाएँ -

1- ज्योफ्री ऐन लीच के अनसार, -''साहित्य में भाषागत अध्ययन शैली विज्ञान है।''[5]

1. शैली विज्ञान- डॉ. नगेन्द्र, 6
2. शैली विज्ञान और संरचनावाद की परस्परावलम्बिता (राम की शक्तिपूजा के संदर्भ में) डॉ. नरेन्द्र सैनी, पृ. 8 भावना प्रकाशन 126, पहाड़गंज दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1993, मूल्य 140
3. नयी कविता की भाषा डॉ. रविनाथ सिंह, पृष्ठ- 140
4. हिन्दी भाषा और साहित्य - डॉ0 कैलाश नाथ पाण्डेय, पृष्ठ - 166, विजय प्रकाशन मंदिर, कमच्छा, वाराणसी सन् 2000
5. शैली विज्ञान की रूपरेखा - प्रस्तुति कृष्ण कुमार शर्मा, पृष्ठ - 23, संधी प्रकाशन, जयपुर - 1974

Scanned with CamScanner

2- **न्यूनमैन** का विचार है कि, -" Style is thinking out in to language" अर्थात् " भाषा के अन्तर्गत सोचना ही शैली है।"

3- **गाल्प्रिन** के अनुसार -"शैली विज्ञान विशिष्ट स्तर का भाषा - विज्ञान है।"[1]

4- **गेटे** के विचार से - "An anthor, is style is faithful copy of his mind अर्थात् किसी भी कृतिकार की शैली उसके मस्तिष्क की विश्वसनीय प्रतिलिपि होती है।"

5- **रोमन याकोब्सन** का कहना है कि, - "भाषा विज्ञान शाब्दिक संरचना का सार्वभौम विज्ञान है, अत: साहित्यालोचन तक को इसका अंगभूत कहा जा सकता है।"[2]

6- **एलिस** कहते हैं कि -"Style is the very thought it self अर्थात् स्वयं विचार ही शैली है।

7- **रेनवेलक** कहते है कि -"मुझे शैली विज्ञान सर्वत्र भाषा विज्ञान का प्रभेद प्रतीत होता है। मैं नहीं समझता कि भाषा विज्ञान को इतना प्रसारात्मक और व्यापक समझने में किसी को विरोध क्यों है।"[3]

8-**मेरी** का कथन है कि -"Style is a quality of language which comunicates precisly emotions or thoughts,अर्थात् भाषा के उस वैशिष्ट्य को शैली कहते हैं, जो भावों और विचारों को उचित ढंग से प्रेषित करता है।"

9 - **डॉ. जानसन** का विचार है कि, -"हर व्यक्ति एक विशिष्ट शैली को अपनाता है,- . . . . Any man has a peculiar style."

10- **चेस्टरफील्ड** का कथन है कि ,- "विचारों के परिधान को शैली कहते हैं - Style is the dress of thoughts."

11- **बफो** की मान्यता है कि ,-"विचारक्रम तथा विचारगति को ही शैली कहते हैं, - Style consists in the order and the movement, which we introduce in to our thoughts."

12-**शौपन हावर** का मत है कि, -"शैली मस्तिष्क की बाह्यकृति को कहते हैं, - Style is the physiognomy of the mind."

13-**शेरन** का कथन है कि, -"किसी भी कलात्मक अभिव्यक्ति में व्यक्तित्व की विद्यमानता को शैली कह सकते हैं, -The term (style) simply indicates the presence of personality in the manner of artistic expression."

14- **स्लेद** की मान्यता है कि, -"शैली भाषा और विचार दोनों में ही विद्यमान रहती है - There is a style in thought as well as style in language."

15- इसी प्रकार **प्राउस्ट** का मत है कि, - "शैली एक तकनीक का प्रश्न नहीं, अपितु यह एक दृष्टि का प्रश्न हैं, -Style is a question not of technique but of vision."

16- कुल मिलाकर यह है कि **यूरोपीय** समीक्षकों के अनुसार यह पद्धति भाषा विज्ञान तथा साहित्यिक समीक्षा का संगम है, तो **रोमान्स** शैली विज्ञान में सौन्दर्य शास्त्र के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का विस्तृत प्रभाव है, **अमेरिकन** मान्यता के अनुसार सम्प्रेषण के स्तर पर शैली से संबंधित साहित्य केन्द्रित अध्ययन ही वस्तुत: शैली वैज्ञानिक अध्यन है तो **रूसी** तथा **चेक** साहित्य धारा में शैली विज्ञान रूसी रूपवाद और चेक संरचनावाद का मिश्रण है। **फ्रेंच** मान्यता के अनुसार कोई भी साहित्यिक कृति "शैलीबद्ध अभिव्यक्तियों की समष्टि है तो **जर्मन शैली** वैज्ञानिक इस विधा को वैयक्तिक शैली से संबंधित मानते हैं तथा **स्पेनी** विद्वान इसे साहित्य का विज्ञान मानते हैं।

(ख)- भारतीय परिभाषाएँ

1- **डॉ. सुरेश कुमार** के अनुसार, -"शैली का वैज्ञानिक अध्ययन शैली विज्ञान है।"[4]

2- **डॉ. भोला नाथ तिवारी** के विचार से, -"शैली के वैज्ञानिक अध्ययन को शैली विज्ञान कहते हैं।"[5]

3- **डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी** लिखते हैं कि, -" साहित्य भी भाषागत प्रयोग है और इन प्रयोगों का अध्ययन शैली विज्ञान

1- शैली विज्ञान : प्रतिमान और विश्लेषण - प्रस्तुति - पाण्डेय शशि भूषण 'शीतांशु', पृष्ठ -18, देवदार प्रकाशन, दिल्ली - 1984

2- Style in Language - Roman Yokebsen, P.350,M.I.T.Press cambridge-1960

3- Stylistic, Poetics and criticism, Literary Style Asymposiam - Samoor chatman, P.66, Oxford, London - 1971

4- शैली विज्ञान - डॉ. सुरेश कुमार, पृष्ठ - 79, दि मैकमिलन कंपनी आफ इन्डिया लि0 दिल्ली - 1977

5- शैली विज्ञान - डॉ. भोला नाथ तिवारी, पृष्ठ -11, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली - 1977

Scanned with CamScanner

करता है।''[1]

4- डॉ. श्यामसुन्दर दास का मानना है कि -''किसी कवि या लेखक की शब्द योजना, वाक्यांशों का प्रयोग, वाक्यों की बनावट और उनकी ध्वनि आदि का नाम ही शैली है।''[2]

5- डॉ. नगेन्द्र का मानना है कि, -''शैली विज्ञान की सही परिभाषा, उसका सही अर्थ और क्षेत्रविस्तार यही है कि वह भाषा - विज्ञान के नियमों तथा प्रविधि के अनुसार साहित्य के भाषिक विज्ञान का रूपात्मक अध्ययन है।[3]

6- हिन्दी के सुप्रसिद्ध समालोचक **डॉ. गुलाबराय** ने भी शैली की समीक्षा करते हुए उसके स्वरूप को इस प्रकार समझाया है - ''शैली शब्द के दो - तीन अर्थ हैं : एक तो वह अर्थ है जिसमें कि यह कहा जाता है कि शैली ही मनुष्य है (Style is the man) यहाँ इस अर्थ में शैली अभिव्यक्ति का वैयक्तिक प्रकार है। दूसरे अर्थ में शैली अभिव्यक्ति के सामान्य प्रकारों को कहते हैं। भारतीय समीक्षा - शास्त्र की रीतियाँ इसी अर्थ में शैलियाँ है। तीसरे अर्थ में शैली वर्णन की उत्तमता को कहते हैं। जब हम किसी रचना के संबंध में कहते हैं 'यह है शैली' अथवा किसी की विगर्हणा करते हुए कहते है कि 'यह क्या शैली है ? या 'वे क्या जानें कि शैली क्या है ?' तब हम उसको इसी अर्थ में प्रयुक्त करते हैं। शैली में न तो इतना निजीपन हो कि वह सनक की हद तक पहुँच जाय और न इतनी सामान्यता हो कि वह नीरस और निर्जीव हो जाय। शैली अभिव्यक्ति के उन गुणों को कहते हैं, जिन्हें लेखक या कवि अपने मन के प्रभाव को समान रूप में दूसरों तक पहुँचाने के लिए अपनाता है।[4]

7- पं. रामदहिन मिश्र ने शैली की परिभाषा करते हुए लिखा है कि 'किसी वर्णनीय विषय के स्वरूप को खड़ा करने के लिए उपयुक्त शब्दों का चुनाव और उनकी योजना को 'शैली' कहते हैं।[5] आपने शैली के चार गुण बतलाये हैं- ओजस्विता, सजीवता, प्रौढ़ता और प्रभावशालिता।[6] इसके साथ ही आपने सुन्दर शैली के तीन उपादान बतलाये हैं - 1-शब्दों का सुसंचय और सुप्रयोग, 2- वाक्य-विन्यास और 3- भाव प्रकाशन का ढंग।[7] इसके अतिरिक्त आपका विचार है कि रूचि भिन्नता, व्यक्ति-वैशिष्ट्य और प्रकाशन-भंगि की विविधता से शैलियाँ भी विविध होती हैं जैसे, 1- व्यावहारिक या स्वाभाविक शैली - इसमें सरल, सुबोध और मुहावरेदार भाषा का प्रयोग होता है। 2- ललित शैली - इसकी भाषा सुन्दर, मधुर शब्दों वाली तथा अलंकृत और चमत्कारिक होती है। 3- प्रौढ़ या उत्कृष्ट शैली - इसकी भाषा प्रौढ़ और उच्च विचारों के प्रकाशन योंग्य होती है। 4- गद्य काव्य शैली - सरस, सुन्दर और काव्य गुण वाली रचना इसके अन्तर्गत आती है। इसका एक रूप 'प्रलापक शैली' के नाम से प्रसिद्ध है। उसमें लेखक भावावेश में आकर किसी विषय पर मर्मस्पर्शी भाषा में अपने आन्तरिक उद्‌गारों और अनुभूतियों को व्यक्त करता है।[8]

8- डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना के अनुसार - शैली का संबंध किसी वक्ता, लेखक या कवि की अभिव्यंजना - पद्धति से होता है। प्रत्येक वक्ता, लेखक या कवि की अभिव्यंजना भाषा के माध्यम से होती है, उस भाषा में प्रयोक्ता के व्यक्तित्व की छाप रहती है तथा वह अभिव्यंजना किसी - न - किसी विषय से भी सम्बद्ध होती है। इतना ही नही, प्रत्येक वक्ता, लेखक या कवि जब किसी विषय की अभिव्यक्ति के लिए भाषा का प्रयोग करता है,तब वह अपनी रुचि के अनुकूल शब्दों का चयन करता है, कतिपय प्रचलित एवं प्रसिद्ध अभिव्यंजना - पद्धति से कुछ हटकर चलने का प्रयास करता है, प्राचीन एवं रूढ़ प्रयोगों को छोड़कर नूतन शब्द प्रयोग करता है, विभिन्न पुरातन उपमानों को छोड़कर नूतन उपमानों को अपनाता हुआ अपनी अप्रस्तुत योजना में भी नूतनता लाने का प्रयास करता है तथा अन्य अभिव्यक्ति के सहज-सुलभ उपलब्ध उपकरणों को अपनाता हुआ भी उनमें कुछ - न - कुछ नवीनता, चारुता एवं आकर्षण उत्पन्न करने का प्रयास करता है। इसी कारण उसकी अभिव्यंजना - पद्धति कुछ पृथक् सी दिखाई देने लगती है और उसकी अभिव्यक्ति में उसकी वैयक्तिक विशेषता भी आ जाती है। अतएव संक्षेप में, शैली का स्वरूप इन शब्दों में निर्धारित किया जा सकता है - 'भाषागत अभिव्यक्ति की विशिष्ट एवं वैयक्तिक पद्धति को शैली कहते हैं।

शैली के प्रकार- डॉ. महेश प्रसाद जायसवाल लिखतें है कि ''पिछले बीस, पचीस वर्षो से शैली अध्ययन के क्षेत्र में दों पक्ष उभर कर आए हैं। पहला व्यक्तिगत कथ्य शैली, जिसका संबंध लिखित अथवा साहित्यिक भाषा से होता है एवं वह भाषा के कलात्मक तथा परिनिष्ठित प्रयोग के लिए उत्तरदायी होती है। दूसरा, सामान्यजन की बोली जाने वाली भाषा की कथ्य शैली, जिसका संबंध अलिखित, सामाजिक व्यवहार, अकृत्रिम और सामयिक प्रयोग की भाषा से होता है। इसके अस्तित्व और विकास का दायित्व

1- हिन्दी आलोचना का भाषावादी दृष्टिकोण और शैली विज्ञान-डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी,पृ0-54,दिल्ली1975

2-साहित्यालोचन - डॉ. श्याम सुन्दर दास, पृष्ठ - 302

3- शैली विज्ञान - डॉ. नगेन्द्र, पृष्ठ - 19, नेशनल पब्लिसिंग हाउस, दिल्ली - 1976

4- सिद्धान्त और अध्ययन - डॉ. गुलाब राय, पृष्ठ - 190

5- काव्यदर्पण - डॉ. रामदहिन मिश्र, पृष्ठ - 352

6- काव्यदर्पण - डॉ. रामदहिन मिश्र, पृष्ठ - 352

7- काव्यदर्पण - डॉ. रामदहिन मिश्र, पृष्ठ - 352 - 53

8- काव्यदर्पण - डॉ. रामदहिन मिश्र, पृष्ठ - 353

Scanned with CamScanner

किसी व्यक्ति या विधा पर नहीं होता।''[1] शैली की इस परिकल्पना और पक्षों को लेकर महत्वपूर्ण कार्य फ्रांसीसी विद्वान **पियेर गिरांड** ने किया, जिसकी पुस्तक 'La Stylistique' - P. Guirand, 1954 में पेरिस से प्रकाशित हुई। इसमें लेखक ने शैली अध्ययन की विभिन्न प्रारंभिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है। अभिव्यक्ति की शैली और 'व्यक्ति की शैली' - La Stylistuqie de L. expression Stylishque de Lindividual तथा Linguistics and Style - John Spenceer and Michael Gregory, Oxford - दो शैली भेद मानते हुए उसने इनको एक दूसरे का पूरक एवं आश्रित भी माना। इस पूरकता एवं अन्योन्याश्रितता के दर्शन यथार्थवादी साहित्य तथा उच्च शिक्षित व्यक्तियों की बोलचाल की भाषा में होता है। फ्रेंच में लिखित को Langue तथा अलिखित कथा भाषा को Parole कहकर दोनों रूपों में तुलनात्मक विश्लेषण का काम सरल बना दिया गया है। अंग्रेजी के Language और speech से भी अधिक स्पष्टता इन फ्रेंच शब्दों में दिखाई देती है। शैली के अध्ययन के लिए भाषा के इन व्यावहारिक रूपों का स्पष्ट अलगाव आवश्यक है।[2] **एस. उलमैन** की पुस्तक 'फ्रेंच उपन्यास में शैली'।[3] साहित्यिक विधा की भाषा वैज्ञानिक विवेचना का सुन्दर उदाहरण है।

बहरहाल, शैली के दो पक्ष होते हैं - साधन और साध्य । साधन पक्ष में भाषा व्यवस्था की उप व्यवस्थाओं के आधार पर नाम होते हैं, जैसे - स्वनिम शैली (Phonological Style), शब्द शैली (lexical Style), वाक्य शैली (Synatctic Style), अलंकृत शैली (Figurative Style) आदि। साध्य पक्ष में अनेक आधारों पर नामकरण हो सकते हैं। इनमें **पहला** है - भाषा शैली, जैसे - भाषण शैली, विज्ञापन शैली, समाचार पत्र शैली, साहित्यिक शैली आदि। **दूसरा** है - प्रसंग के घटक, जैसे - साहित्यिक शैली के अन्तर्गत कथानक शैली, चरित्र चित्रण शैली, वस्तु वर्णन शैली, भाव वर्णन शैली आदि। **तीसरा** आधार है, अभिव्यक्ति का गुण, जैसे - भव्य शैली, उदात्त शैली, स्पष्ट शैली, सादी शैली तथा कृत्रिम शैली आदि।

शैली के ये नामकरण पाठकी आंतरिक संरचना - शीर्ष स्थानीय साहित्यिक संरचना तथा उसकी मूलभूत भाषा संरचना - पर आधारित है। पाठके बाह्य पक्ष के आधार पर भी शैली के नामकरण किए जाते हैं। ये आधार हैं - पाठका शीर्षक (रचना का नाम), लेखक, विधा (साहित्यिक तथा साहित्येतर) और युग । 'बाण भट्ट की आत्मकथा' कादम्बरी शैली की रचना है - इसमें शैली का नामकरण एक विशेष रचना 'कादम्बरी' के नाम पर हुआ है। हिन्दी कहानी में प्रसाद शैली का अनुकरण इतना नहीं हुआ, जितना प्रेमचन्द शैली का। इसमें नामकरण का आधार लेखक है। नाटक शैली, पत्र शैली आदि का नामकरण विधा पर आधारित है और छायावादी शैली, प्रगतिवादी शैली आदि नामकरण युग को लेकर किए गए हैं।[4]

शैली की प्रकार्यगत (Functional) विशेषताएँ- शैली विज्ञान पर कई महत्वपूर्ण कृतियों के लेखक और अधिकारी विद्वान आदरणीय **डॉ. पाण्डेय शशि भूषण 'शीतांशु'** ने शैली विज्ञान की कतिपय प्रकार्यगत विशेषताओं का उल्लेख निम्न प्रकार किया है,-[5] शैली विज्ञान आलोचना का भाषा माध्यमिक दृष्टिकोण है। साहित्यकार के समक्ष अभिव्यक्ति का एकमात्र साधन भाषा है और उसकी अभिव्यक्ति भी भाषा है। वह कथ्य को अभिव्यक्ति स्तर पर प्रभावपूर्ण बनाने हेतु भाषा के विशिष्ट प्रयोग करता है। इन विशिष्ट भाषिक प्रयोगों की साभिप्रायता को शैली - विज्ञान आलोचना के भाषावादी दृष्टिकोण से उद्घाटित करता है।

1. कृति की स्वायत्तता- शैली विज्ञान कृति को स्वायत्त घोषित करता है तथा इसी दृष्टि से कृति के कथ्य का उद्घाटन तथा मूल्यांकन करता है,

2. वस्तुनिष्ठता एवं वैज्ञानिकता- शैली विज्ञान, साहित्यालोचन की वस्तुनिष्ठ प्रणाली है। अत: अपने विश्लेषण कार्य को वैज्ञानिकता प्रदान करने के लिए भाषा वैज्ञानिक, शैली आधारित एवं साहित्य अवधारणा मूलक विविध प्रतिमानों का आधार ग्रहण करता है,

3. विश्लेषणात्मकता- शैली विज्ञान, कृति की विश्लेषण क्रिया प्रस्तुत करता है। उस प्रक्रिया में यह भाषा के माध्यम ग्रहण करता है तथा कृति के बाह्य संरचना के माध्यम से गहन संरचना को उद्घाटित करता है,

4. भाषा माध्यमिक दृष्टिकोण- शैली विज्ञान आलोचना का भाषा माध्यमिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इस दृष्टि से भाषा के अवयव, ध्वनि, शब्द रूप, वाक्य, अर्थ और प्रोक्ति को विश्लेषण के उपकरण के रूप में प्रस्तुत करता है,

5. साहित्यालोचन का सिद्धान्त- शैली विज्ञान एक स्वतंत्र ज्ञानानुशासन होने के साथ - साथ साहित्यालोचन की

1. आधुनिक भाषा विज्ञान का इतिहास - डॉ. महेश प्रसाद जायसवाल, पृष्ठ - 201।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान का इतिहास - डॉ. महेश प्रसाद जायसवाल, पृष्ठ - 201।
3. Style in the French Novel - S. Ullman, Oxford, 1964
4. शैली विज्ञान - डॉ. सुरेश कुमार, पृष्ठ - 58
5. शैली विज्ञान प्रतिमान और विश्लेषण - पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु', पृष्ठ - 19

Scanned with CamScanner

6. साहित्यालोचन की प्रणाली- शैली विज्ञान जहाँ सैद्धान्तिकी निर्भर प्रतिमानों (मॉडलों) की संरचना प्रस्तुत करता है, वहाँ विश्लेषण की प्रक्रिया में वस्तुनिष्ठ प्रणाली का भी कार्य संपन्न करता है,

7. सौन्दर्य - उन्मीलकता- शैली विज्ञान कृति के कथ्य - विश्लेषण के साथ -साथ कृति के सौन्दर्यात्मक पक्ष को खंडित नहीं करता। वह रचना के सौन्दर्य की शल्य - चिकित्सा नहीं करता, उसे अपनी विश्लेषण प्रक्रिया द्वारा संश्लिष्ट रूप में उन्मीलित करता है,

8. विश्लेषण की क्षमता और संभावनाएँ- शैली विज्ञान की प्रकार्यात्मिक उपलब्धियाँ असंदिग्ध हैं, इन्ही के परिप्रेक्ष्य में इस ज्ञानानुशासन की क्षमता एवं संभावनाओं का काव्यागत स्तर उजागर होता है। वस्तुतः शैली विज्ञान कृति के सौन्दर्यात्मक कथ्य को खंडित रूप में विश्लेषित नहीं करता, अपितु इन विश्लेषणात्मक प्रक्रिया में पाठ की अन्विति को ध्यान में रखते हुए अपने विश्लेषण का संश्लेष भी अपेक्षित रूप में प्रस्तुत करता है।

शैली विज्ञान का महत्व- डॉ. रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव की पुस्तक "शैली विज्ञान और आलोचना की नयी भूमिका" एक आन्दोलन के रूप में उभर कर आयी और प्रथम बार साहित्य को साहित्येतर आयामों से अलग देखने की प्रवृत्ति उभरी। डॉ. साहब ने शैली विज्ञान के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उसकी महत्ता का प्रतिपादन इस प्रकार किया है, - " शैली विज्ञान, साहित्यिक आलोचना का सिद्धान्त भी है और प्रणाली भी। सिद्धान्त के रूप में उसकी यह प्रमुख मान्यता है कि साहित्य 'शाब्दिक कला (Verbal art) है और कृति के रूप में साहित्यिक रचना, भाषा की अपनी सीमा में बँधी एक स्वनिष्ठ (Autonomous) इकाई है। साहित्यिक कृति भाषा को न केवल अभिव्यक्ति का माध्यम बनाती है, अपितु स्वयं भाषा के भीतर ही अपना जन्म धारण करती है। शैली विज्ञान के अन्तर्गत भाषा का अध्ययन एक कला के रूप में किया जाता है। शैली - विज्ञान को साहित्यिक मूल्यांकन में भी बड़ा स्थान मिल चुका है। कुल मिलाकर -

1- यह सर्जनात्मक समीक्षा का नया आयाम है, 2-शैली विज्ञान को रीति विज्ञान के नाम से भी अभिहित करने का प्रयास हुआ, 3- शैली विज्ञान साहित्य के भाषिक विधान का रूपात्मक अध्ययन है, 4- शैली विज्ञान साहित्य भाषा के साभिप्राय अध्ययन का विज्ञान है, 5- शैली विज्ञान का एक सांख्यकीय आधार भी है, 6- शैली विज्ञान साहित्य को समझने की एक दृष्टि है। 7- यह विधा कृति में अन्तर्निहित साहित्यिकता का उद्घाटन करती है, 8- यह भाषा की प्रकृति एवं संरचना को स्पष्ट करने में सक्षम है तथा 9- यह सर्वथा नूतन आलोचना विधा किसी कृति की, उसके हर कोण से समीक्षा करने में सक्षम है।

शैली विज्ञान की शाखाएँ- डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना के अनुसार[1] भाषा विज्ञान के आधार पर भाषा की पाँच इकाइयाँ मानी गयी हैं - ध्वनि,शब्द, रूप, वाक्य और अर्थ। इन्ही इकाइयों के आधार पर शैली विज्ञान की भी पाँच शाखाएँ मानी जाती हैं, -(क)- ध्वनि शैली विज्ञान (Phono - Stylistics)(ख)- शब्द शैली विज्ञान (Wordo - Stylistics) (ग)- रूप शैली विज्ञान (Morpho - Stylistics) (घ)- वाक्य शैली विज्ञान (Syntexto - Stylistics)(ड़)- अर्थ शैली विज्ञान (Sementico - Stylistics)

(क) ध्वनि - शैली विज्ञान- इसके अन्तर्गत ध्वनि - विचलन, ध्वनि - चयन, ध्वनि - प्रभाव, ध्वनि -समानान्तरता, लय, छन्द, व्यवस्था आदि का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है,

(ख) शब्द शैली विज्ञान- इसके अन्तर्गत शब्द - विचलन, शब्द - चयन, शब्द समानान्तरता, शब्दालंकारों में प्रयुक्त शब्दों के विचलन, चयन, समानान्तरता आदि का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

(ग) रूप शैली विज्ञान- इसके अन्तर्गत रूप - विचलन, रूप - चयन, रूप - समानान्तरता आदि का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

(घ) वाक्य शैली विज्ञान- इसके अन्तर्गत विविध प्रकार के वाक्यों, मुहावरों, वाक्य - चयन, वाक्य - विचलन आदि का अध्ययन किया जाता है, तथा

(ड़) अर्थ शैली विज्ञान- इसके अन्तर्गत भी विविध प्रकार के अर्थ - चयन, अर्थ - विचलन, अर्थ - प्रभाव आदि का अध्ययन किया जाता है।

1. भाषा विज्ञान का सिद्धान्त और हिन्दी भाषा- डॉ. द्वारिका प्रसाद संक्सेना, पृष्ठ-267

Scanned with CamScanner